झारखण्ड के मेरे प्यारे भाईयों, बहनों एवं बच्चों

जोहार

देश के 60वें स्वतंत्रता दिवस पर मैं हृदय से आपको बधाई देता हूँ। वीर सपूतों की यह धरा आज स्वाधीनता के बाद अपना भविष्य खुद गढ़ रही है। सारी दुनिया में ज्ञान और मेधा के हर क्षेत्र में हमारे देश के सपूतों ने अपनी सफलता का परचम लहराया है और इसीलिए आज खुली फिजां में हर भारतवासी अपनी स्वाधीनता के जज्बे के साथ स्वाधीनता आंदोलन के प्रतीक उस तिरंगे के नीचे नस्तमस्तक है, जिसकी छाँव में हमारे रणबांकुरों ने अपनी जान की कभी परवाह नहीं की। झारखण्डवासियों, इस आजादी और वतनपरस्ती की हमें भारी कीमत चुकानी पड़ी है। हमारे देश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास सदियों पुराना है। अंग्रेजी उपनिवेश से आजाद होने की छटपटाहट की पहली झाँकी भले ही हमें सन् सत्तावन के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ी हो, पर औपनिवेशिक दासता से मुक्ति का प्रयास देश और हमारे राज्य के वीर सपूतों ने काफी पहले शुरू कर दिया था। सिद्धो–कान्हू का संथाल विद्रोह और सन्यासी विद्रोह की कड़ियाँ अगर हम जोड़ें, तो उस बेचैनी को महसूस करना मुश्किल नहीं होगा। बाद में स्वाधीनता आंदोलन की प्रगति के क्रम में हमारे झारखण्ड के वीर सेनानियों ने अतुलनीय देशभक्ति का परिचय देते हुए देश के आंदोलनकारियों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर स्वाधीनता की लड़ाई में अपनी भागीदारी निभायी। झारखण्ड की नदियाँ, पहाड़, उपत्यकाएँ और सारा वन्य परिवेश इस बात का गवाह है कि किस तरह झारखण्ड के वीर सपूतों ने अत्यंत कम संसाधन और संपर्क सूत्र की कमी के बावजूद एकता और बलिदान के जज्बे के साथ अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये थे। यह उन्हीं योद्धाओं के बलिदान का फल है कि हम भारतवासी आज खुली हवा में साँस ले रहे हैं और सुराज तथा आत्मनिर्भरता की सुख–सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं। झारखण्ड के उन्हीं शहीदों की भूमिका ने विस्तारित भारत के अलग–अलग हिस्सों में चलनेवाले स्वाधीनता आंदोलन में ताकत पैदा की, जिसके परिणामस्वरूप

भारत की जनता ने आजादी की सुबह देखने का सौभाग्य प्राप्त किया। हर साल स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम उन शहीदों को अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं। उनकी राहों पर चलने का संकल्प लेते हैं। हमें यह कतई नहीं भूलना चाहिए कि यह आजादी उन्हीं आंदोलनकारियों के त्याग के कारण हमें मिली है। हमारा यह भी नैतिक कर्त्तव्य है कि देश–राज्य के शहीदों के आश्रितों को हम एक अच्छा जीवन प्रदान करें, उनके वास्तविक वंशजों को उनका हक दिलाने में सहायक साबित हों।

झारखण्डवासियों, अपने देश के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हमारे नेताओं की लौह मानसिकता, जूझने की शक्ति और राष्ट्रीय एकात्म भाव का अनेकों बार प्रदर्शन किया है। देश ने महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, लौहपुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल, लालबहादुर शास्त्री, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, बाल गंगाधर तिलक, मौलाना अबुल कलाम आजाद का गंभीर, प्रेरक और व्यापक नेतृत्व देखा, तो नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, अशफाकउल्ला खान, रासबिहारी बोस, खुदीराम बोस, सुखदेव, राजगुरू और मदनलाल धींगरा जैसे क्रांतिकारियों की दिलेरी भी देखी है। इन आंदोलनकारियों और क्रांतिकारियों के कारण हमें अंग्रेजी दासता से मुक्ति मिलने का मार्ग प्रशस्त हुआ। आज हम भले ही आजाद हो गये हों, पर हमें इस बात का हमेशा ध्यान रखना है कि आजादी मिलने से अधिक महत्वपूर्ण उस आजादी को बरकरार रखना है। जहाँ तक झारखण्ड की बात है, यह धरती रत्नगर्भा तो है ही, वीर जननी भी है। इस राज्य के क्रांतिकारियों ने लगातार दो सौ सालों तक अंग्रेजी दासता के खिलाफ विद्रोह का झंडा बुलंद किया। अमर शहीद धरती आबा बिरसा मुण्डा, सिद्धो–कान्हू, चाँद–भैरव, तिलका मांझी, टाना भगत, शेख भिखारी, टिकैत उमराव सिंह, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, पांडेय गणपत राय और शहीद नीलांबर–पीतांबर का झारखण्ड हमेशा ऋणी रहेगा। उन्हीं की कुर्बानियों की बदौलत हमने आजादी की सुबह देखी, परतंत्रता की बेड़ियाँ उखाड़ फेंकी। हमें अपने राज्य के इन शहीदों पर नाज है। आज के दिन हम अपने उन शहीदों के प्रति भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

झारखण्डवासियों, आज के दिन हम अपने वीर सैनिकों को कैसे विस्मृत कर सकते हैं, जिनकी बदौलत हम जल, जमीन और आसमान—हर जगह महफूज हैं। मैं अपने उन वीर सैनिकों को भी हृदय की गहराईयों से श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूँ, जिन्होंने इस आजादी को बरकरार रखने के लिए, देश की सीमा की रक्षा के लिए अपनी जान की परवाह कभी नहीं की। देश की तरफ आँख उठाकर देखनेवाले किसी भी नापाक इरादों को हमारे सैनिकों ने हमेशा कुचल दिया है। परमवीर चक्र विजेता लांसनायक अलबर्ट एक्का और कारगिल के शहीद नागेश्वर महतो के उदाहरण हमारे सामने हैं। ऐसे कितने ही जांबाजों से झारखण्ड की यह धरती भरी पड़ी है। हम उन सभी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। युद्ध और शांति किसी भी समय हमारे सैनिकों के साहसिक कारनामों से दुनिया परिचित है। ये जवान अपने घर परिवार से दूर शून्य से 40 डिग्री नीचे जमा देनेवाले बर्फ में या फिर थार की मरूभूमि में रेत के बवंडर और 55 डिग्री के झुलसाने वाले तापमान में भी बराबर ही दक्षता से अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हैं। देश की सीमा और संप्रभुता की रक्षा के लिए हमारे सैनिक हमेशा दुश्मनों से लोहा लेते हैं और अत्यंत विषम परिस्थितियों में भी हमेशा चौकस रहकर सीमाओं की रक्षा करते हैं। हम शुक्रगुजार हैं अपने सैनिकों के, जिनकी बदौलत हमारा देश संप्रभु, स्वाधीन और अखण्ड है। उन सैनिकों का योगदान अप्रतिम हैं। हमें उनपर गर्व है।

झारखण्डवासियों, आज का दिन अपनी अस्मिता की पहचान, अपने आचरण का नियमन और अपने कर्त्तव्यों की तमाम परिभाषाएँ नये सिरे से तय करने का भी दिन है। आजादी मिलने के उनसठ सालों बाद हमें इस बात पर गौर करना है कि हम आजादी को एक बहुमूल्य अर्थ दें और इस भावना के साथ खुद के संस्कार, कर्त्तव्य और महत्वकांक्षा को देश की चतुर्दिक प्रगति के संदर्भ में जोड़े। देश हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। हम विकास के नये प्रतिमान गढ़ रहे हैं। हम महाशक्ति बनने की तमन्ना रखते हैं। लेकिन यह सपना बिना सच्चे राष्ट्रवाद के जज्बे के पूरा नहीं हो सकता। राष्ट्र के प्रति निष्ठा और ईमानदार प्रयासों की सीढ़ी पर चढ़कर हम

इक्कीसवीं सदी का चुनौती भरा रास्ता तय करने में सक्षम हो पायेंगे। यह ठीक है कि आजादी के बाद हमें अधिकार मिले हैं, पर हम अपने कर्त्तव्यों के प्रति कितने सचेष्ट हैं, इसे तय किये बिना हमारी राह आसान नहीं हो सकती। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रकट करने और सम्मान से जीने का अधिकार है। पर आजादी हमसे कुर्बानी भी माँगती है। अपना आत्मविश्वास बरकरार रखते हुए राष्ट्र द्वारा तय किये गये मानकों पर खरा उतरने की भी जरूरत है। हमेशा याद रखें कि हम आजाद मुल्क के अनुशासित और विवेकशील नागरिक बनकर ही सारी दुनिया को दिखा सकते हैं कि हमने अपनी तकदीर कैसे संवारी है।

नवगठित राज्य झारखण्ड ने पिछले छः सालों में प्रगति की नई राह बनाने का प्रयास किया है। राज्य में मेगा पूंजी निवेश के लगभग 156 प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। पूंजी निवेश के प्रस्तावों के क्रम में हस्ताक्षरित एम0ओ.यू0 के आलोक में लगभग 2 लाख करोड़ रू0 का पूंजी निवेश राज्य में होना सम्भावित है। मेगा क्षेत्र के हस्ताक्षरित एम0 ओ0 यू0 में से कतिपय औद्योगिक इकाइयों द्वारा अंतिम चरण की कार्रवाई पूरी कर ली गयी है। संथाल परगना प्रमंडल में भी औद्योगिक विकास की संभावनाओं को दृष्टि में रखकर संथाल परगना औद्योगिक विकास प्राधिकार के गठन का निर्णय लिया गया है ताकि इस क्षेत्र में औद्योगिक विकास तीव्रता से हो सके।

राज्य में उपलब्ध मानव संसाधन को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना सरकार की प्राथमिकता रही है और राज्य में सम्भावित पूंजी निवेश तथा बड़े उद्योग–धन्धों की स्थापना के फलस्वरूप भविष्य में शिक्षित एवं तकनीकी दक्षता प्राप्त कार्मिकों की आवश्यकता के मद्देनजर शिक्षा का प्रचार–प्रसार इस प्रकार सुनिश्चित किया जा रहा है कि आवश्यक कार्मिकों की अधिकांशतः पूर्ति राज्य से ही हो जाये और लोगों को बेहतर रोजगार स्थानीय स्तर पर ही प्राप्त हो सके। इसके लिए राज्य के विश्वविद्यालयों में सुधार एवं उन्नयन के अनेक कदम पिछले वर्ष उठाये गये हैं। राज्य के सभी विश्वविद्यालयों में सिनेट एवं सिंडीकेट की नियमित बैठकें हुई हैं तथा सत्रों के नियमितीकरण हेतु भी कार्रवाई की गयी है। सिद्धो–कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय,

दुमका को यू. जी. सी. (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) से मान्यता मिले इस हेतु सार्थक प्रयास किया गया है एवं मापदंड के अनुरूप 50 नये पदों का सृजन भी किया गया है ताकि विश्वविद्यालय मान्यता से संबंधित सभी आहर्ता पूरी कर सके। हमारे विश्वविद्यालयों में रोजगारपरक शिक्षा मिले, इसके लिए सभी विश्वविद्यालयों में नये वोकेशनल पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गये हैं। राज्य के पाँच में से चार विश्वविद्यालयों में अनेक वर्षों के बाद दीक्षांत समारोह आयोजित किए जा चुके हैं तथा सिद्धु–कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय में भी इसी वर्ष दीक्षांत समारोह आयोजित किया जायेगा। छात्र–छात्राओं को विश्वविद्यालय के कार्यों में सार्थक भूमिका मिले इस हेतु छात्र संघों के सीधे निर्वाचन के परिनियम बनाये गये हैं ताकि विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में छात्र संघों के वर्षों से लंबित चले आ रहे चुनावों को संपन्न कराया जा सके।

झारखण्डवासियों, तेजी से छोटी होती दुनिया में हम जी रहे हैं। यह स्किल का जमाना है। अब पारंपरिक अध्ययन कर परिपूर्णता हासिल करने का युग नहीं रहा। यह सूचना क्रांति और औद्योगिक विस्तार का युग है। इस युग में पारंपरिक पढ़ाई से अलग व्यावसायिक पाठयक्रमों की तरफ छात्रों का रूझान अगर बढ़ रहा है, तो सिर्फ इसलिए क्योंकि यह ज्ञान स्वरोजगार से लेकर व्यवसायगत मांग में शामिल हो गया है। एक व्यक्ति के अंदर अब कई तरह की क्षमताओं की मांग की जा रही है। आप अपने आसपास ही देखिए, कई परंपरागत रोजगार सिमट रहे हैं। नये क्षितिज पर नयी संभावनाएँ विकसित हो रही है। इन संभावनाओं के बीच हमें अपनी जगह बनाने की चुनौती है। पढ़ाई करते हुए हम रोजगारपरक पाठयक्रम चुनें, उनमें दक्ष हों, तो निश्चित रूप से हम देश के विकास में अपनी भूमिका निभाने में सक्षम होंगे। याद रखिए, काम कोई छोटा या बड़ा नहीं होता।

शिक्षा के सर्वव्यापी प्रचार–प्रसार हेतु केन्द्र सरकार, यूनिसेफ और राज्य सरकार के समन्वित प्रयास से सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत **स्कूल चले हम** अभियान चलाया गया, जिसमें सामाजिक संस्थाओं, जन प्रतिनिधियों, सरकारी

कर्मचारियों का व्यापक सहयोग प्राप्त हुआ और प्राप्त सूचनाओं के अनुसार लगभग 7 लाख बच्चों का नामांकन किया गया है।

छात्राओं में शिक्षा के प्रति अभिरूचि पैदा करने एवं छात्राओं का छीजन प्रतिशत कम करने के उद्देश्य से उनके स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा पर लगनेवाले शिक्षण शुल्क एवं परीक्षा शुल्क की प्रतिपूर्ति की योजना लागू की गयी है और अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं के अनुरूप सामान्य एवं पिछड़ी जाति के बी0पी0एल0 छात्राओं को साइकिल प्रदान की जा रही है। माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए लगभग 4000 शिक्षकों को संविदा के आधार पर नियुक्त करने का निर्णय लिया गया है।

सामान्य शिक्षा के साथ ही तकनीकी शिक्षा प्रदान करना भी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है और राज्य में तकनीकी शिक्षण संस्थानों की कमी को देखते हुए सरकार द्वारा राजकीय क्षेत्रों में तीन नये इन्जीनियरिंग कॉलेज एवं आठ नये पोलिटेक्निक संस्थानों की स्थापना की जा रही है। राजकीय क्षेत्र के अन्तर्गत देवघर में एक नये इन्जीनियरिंग कॉलेज की स्थापना की जा रही है जिसका संचालन बी0आई0टी0 मेसरा के द्वारा किया जायेगा।

जैसा मुझे बताया गया है राज्य में उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए सरकार आवश्यक आधारभूत संरचनाओं का निर्माण इस प्रकार कर रही है कि न केवल राज्य में चिकित्सा के क्षेत्र में सुपर स्पेशलिटी दक्षता प्राप्त हो बल्कि चिकित्सा का क्षेत्र एक औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित हो सके।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्र–छात्राओं के अध्ययन के प्रति अभिरूचि पैदा करने एवं उनकी आर्थिक कठिनाईयों को दूर करने के लिए भी विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही हैं। अनुसूचित जनजाति के सर्वांगीण विकास हेतु जनजातीय परामर्शदातृ समिति को प्रभावशाली बनाया जा रहा है जिसकी बैठक जनवरी, 2006 में दुमका में हुई थी।

राज्य में खेती योग्य भूमि सीमित है। खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भरता के लिए यह आवश्यक है कि कृषि कार्य, बागवानी तथा फल–सब्जी का उत्पादन क्षेत्र बढ़ाया जाय एवं उत्पादन के लिए उन्नत वैज्ञानिक तरीके अपनाकर कृषि उपज में बढ़ोत्तरी लाई जाय। इस हेतु बिरसा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा नए कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना कर Lab to Land कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

जल प्रबंधन के क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति का समुचित उपयोग नहीं हो पाने के कारण वर्षा का अधिकांश जल बेकार हो जाता है। कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए राज्य के वर्षा आधारित कृषि क्षेत्र में बेहतर जल प्रबंधन करने हेतु जल छाजन विकास कार्यक्रम पर विशेष बल दिया जा रहा है। इसके लिए आवश्यक है कि वर्षा जल का संरक्षण किया जाए। मैने स्वयं राजभवन, राँची में जल संरक्षण की प्रणाली लागू करवाई है जिसमें पाँच लाख रूपये के साधारण लागत पर पूरे राजभवन के लगभग साठ एकड़ भूमि का जल संरक्षित होता है।

राज्य में कृषि एवं बागवानी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय बागवानी मिशन कार्यक्रम के तहत राज्य के 10 जिलों में फल उत्पादन, फूल उत्पादन, सुगंधित पौधो का उत्पादन, सब्जी बीज उत्पादन आदि कार्यक्रम 10 लीड एन0जी0ओ0 के माध्यम से शुरू कराया गया है। गोड्डा में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के अधीन एक महाविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। गौरियाकर्मा, हजारीबाग में डेयरी टेक्नोलोजी कालेज की स्थापना एवं पशुधन एवं मत्स्य अनुसंधान संस्था की स्थापना की दिशा में कार्रवाई की गयी है। वन औषधीय पौधों का निर्यात विधिवत् रूप से करने हेतु गम्भीरता पूर्वक कार्रवाई की जा रही है। राजभवन, राँची में भी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नाम से एक औषधीय पौधों का उद्यान बनवाया गया है ताकि लोगों को झारखण्ड में पाये जानेवाले औषधीय पौधों की जानकारी हो सके।

राज्य एवं राष्ट्र का विकास गाँव एवं ग्रामीणों के समग्र विकास से ही सम्भव है। गाँवों के पिछड़ेपन को दूर कर ग्रामीणों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने एवं

उनके सर्वांगीण विकास के लिए केन्द्र सरकार की सहायता से इंदिरा आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना, सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना, स्वर्णजयंती ग्राम समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, मुख्यमंत्री ग्राम सेतु योजना, सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना, विधायक योजना इत्यादि का कार्यान्वयन पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ किया जा रहा है। इंदिरा आवास योजना के अंतर्गत इस वर्ष लगभग 11,153 नये आवास एवं प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना के अन्तर्गत लगभग 388 आवासों का निर्माण किया जा चुका है। मुझे सरकार द्वारा बताय गया है कि सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना के अंतर्गत 25 लाख मानव श्रम दिवस का सृजन किया गया है। राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना के अन्तर्गत राज्य के 22 में से 20 जिलों का चयन किया गया है जिसके अन्तर्गत राज्य के ग्रामीण परिवारों में आजीविका सुरक्षा प्रदान करने के लिए सभी अकुशल कार्य करने के इच्छुक ग्रामीण परिवारों के वयस्क सदस्यों को कुल 100 दिनों की रोजगार की गारंटी परिवार को इकाई मानकर दी जा रही है।

झारखण्ड में पर्यटन की असीम सम्भावनाएं हैं। पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है और इस प्रक्षेत्र को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराकर रोजगार के नये अवसर सृजित किये जा रहे हैं। राज्य में पर्यटक गन्तव्य एवं यात्रा सर्किट चिन्हित किये गये हैं। पर्यटकों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है और इसका यह सुपरिणाम रहा है कि वर्ष 2005 में लगभग 22 लाख घरेलू पर्यटक तथा लगभग 6 हजार विदेशी पर्यटक झारखण्ड परिदर्शन हेतु आये। अभी इस क्षेत्र को और बढ़ाने की आवश्यकता है।

गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों की बेटी की शादी के अवसर पर अब सूदखोरों एवं महाजनों से कर्ज लेने की आवश्यकता नहीं रही है। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत वर्ष 2005–06 में 13,115 कन्याओं की शादी के अवसर पर कुल लगभग 13 करोड़ रूपये का वितरण किया गया है।

संथाल परगना प्रमण्डल में विकास का कार्य सरकार की प्राथमिकता सूची में है। संथाल परगना में 8 पावर सबस्टेशन का निर्माण किया जा रहा है तथा दुमका, पाकुड़ एवं साहेबगंज में ग्रिड सबस्टेशन का कार्य प्रगति पर है। साहेबगंज में गंगा पुल का निर्माण 860 करोड़ रूपये की लागत से किया जाना प्रस्तावित है। इस पुल के निर्माण की दिशा में पड़ोसी राज्य बिहार के साथ वार्त्ता की जा रही है। संथाल परगना प्रमण्डल में पथ एवं पुल निर्माण की कुल 107 योजनाएं विगत वर्ष में पूरी की गयी है। दुमका में अजय–बराज परियोजना, पुनासी बांध परियोजना, गुमानी–बराज परियोजना तथा दरूआ बीयर परियोजना जैसी सिंचाई परियोजनाओं का निर्माण कार्य किया जा रहा है। इन परियोजनाओं के पूरा होने से काफी बड़े भूभाग पर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो सकेंगी।

राज्य के प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता हेतु एवं आमजनों को जानकारी सुलभ कराने के लिए राज्य में सूचना का अधिकार लागू किया गया है एवं इससे संबंधित शिकायतों के त्वरित निष्पादन हेतु राज्य सूचना आयोग का गठन भी किया गया है जिसके लिए मुख्य सूचना आयुक्त सहित छः अन्य सूचना आयुक्तों को शपथ ग्रहण भी कराया गया है ताकि वे अपने कामकाज को सुचारू रूप से चला सके।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष पूर्ण होने पर वर्ष 2007 में विशेष समारोह का आयोजन किया जायेगा। इस हेतु माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने हेतु एक उच्च स्तरीय समिति का गठन भी किया गया है ताकि देश के सभी राज्यों में स्वतंत्रता सेनानियों के कार्यों और बलिदानों को आज की युवापीढ़ी जान सके एवं उससे प्रेरणा ले सकें। राज्य के स्वतंत्रता सेनानियों के विकास एवं कल्याण हेतु राज्य सरकार के द्वारा सार्थक कार्य किए गये हैं इसके अतिरिक्त भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण हेतु भी पांच करोड़ रूपये का एक कारपस फंड बनाया गया हैं ताकि भूतपूर्व सैनिक आत्मनिर्भर हो सकें।

इक्कीसवीं सदी में महिलाओं और पुरूषों में समानता आवश्यक है। आज रोजगार का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रहा, जो सिर्फ पुरूष या महिलाओं के लिए कोई

आरक्षित क्षेत्र हो। हमारे देश की युवतियाँ युवकों के साथ रोजगार के हर क्षेत्र में कंधा से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। सेना जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में भी उन्होंने अपने शौर्य को साबित किया है। इस बदलती स्थिति में हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। हमें अपने घर की युवतियों को बेहतर तरीके से शिक्षित करना होगा, ताकि वे आत्मनिर्भर बन अपनी राह खुद चुन सकें। महिला भ्रूण हत्या पर कड़ाई से रोक लगानी होगी। इसके लिए देश में कानून हैं। हमें राज्य में कानून का अनुपालन सुनिश्चित करना होगा।

इक्कीसवीं सदी में हम पिछड़े, निरक्षर और अकुशल कहलाने का जोखिम कतई मोल नहीं ले सकते। हमें गरीब, अल्पसंख्यक, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तबके के समग्र उत्थान के बारे में कड़ाई से नियमों का अनुपालन करने की जरूरत है। स्वाधीनता के बाद पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था – अभी हमें मीलों चलना है। उनके इस कथन का तात्पर्य आज भी उस अंतिम व्यक्ति तक संसाधनों का लाभ पहुँचाना है। हमें गाँवों का दर्द महसूस कर उन्हें समस्याओं के दलदल से निकालने में जुट जाना होगा, तभी हम वास्तविक अर्थ में लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को अमली जामा पहनाने के संकल्प के पूरा कर सकेंगे। इस हेतु राज्य की विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में बेहतर और समुचित समन्वय, समस्याओं के समाधान करने में सहायक साबित होता है। सभी तंत्रों में एक समन्वय हो, सभी अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वाह करें, ऐसी मेरी संकल्पना है। यह प्रयास राज्य की जनता के हित में जायेगा, ऐसा मेरा विचार है।

भाईयों और बहनों, मैं युवाओं के संपूर्ण चारित्रिक उत्थान का हमेशा से हिमायती रहा हूँ। हमसब इस तथ्य से परिचित हैं कि युवा ही देश के भविष्य हैं। कोई भी सरकार उनकी उपेक्षा कर देश का भला नहीं कर सकती। युवा शक्ति का सही और समुचित समायोजन तथा उनके चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करना भी हमारा दायित्व है। हम अपनी शैक्षणिक प्रणाली में ऐसा आमूल परिवर्त्तन कर सकते हैं, जिससे हमारे युवा किताबी ज्ञान से तो समृद्ध हों ही, साथ ही उनमें चरित्र का

संस्कार भी उभरे। अपने माता–पिता, गुरूजन और शिक्षकों का आदर करने की प्रवृति उनमें बचपन से ही विकसित किया जाना चाहिए। हमारे युवाओं के समक्ष बेहतरीन रोल मॉडल होना चाहिए, ताकि कैरियर और जीवन की राह में वे उन रोल मॉडलों से प्रेरणा ले सकें। यह आदर्श हमें अपने आचरण से उनके सामने रखना है। विश्वास कीजिए, जिस देश के युवा आत्मविश्वास से परिपूर्ण और चुनौतियों को झेलने के लिए मानसिक रूप से परिपक्व होंगे, उस देश का भविष्य उज्जवल होगा।

प्यारे झारखण्डवासियों, हमारे देश की विरासत अत्यंत समृद्ध है। सोने की चिड़िया कहलानेवाले इस देश में प्रकृति ने सारे संसाधन दिल खोलकर लुटाये हैं। आईए, स्वतंत्रता दिवस पर हम यह संकल्प लें कि अपने देश को समृद्ध बनाने में हम जहाँ भी हैं, जिस किसी रोजगार या व्यवसाय से जुड़े हैं, अपना पूरा योगदान देंगे। हम अपनी साझी विरासत को संवारेंगे और विश्व के सामने एक मानक प्रस्तुत करेंगे, जो यह दर्शायेगा कि हम कठिनाईयों और परेशानियों का मुकाबला करना जानते हैं और अपने देश को बहुजन हिताय, बहुजन सुखाऐ के आदर्शों के अनुसार, शांति, सुख, समृद्धि और सर्वसंपन्नता के रास्ते पर ले जाना चाहते हैं।

जय हिन्द्!